DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-9,
PERSONALITY CONCEPT :OBSERVATION METHODS
LECTURE-58

प्रेक्षण विधियाँ (observation methods)

प्रेक्षण विधि वह विधि है जहाँ एक प्रेक्षक व्यक्तियों की क्रियाओ का ध्यानपूर्वक प्रेक्षण एक नियंत्रित परिस्थिति में करता है तथा फिर उनकी क्रियाओं के लेखा –जोखा का विश्लेषण कर उनके व्यक्तित्व के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है| एटकिन्सन हिलगार्ड तथा स्मिथ (1987)के अनुसार प्रेक्षण विधि में मूलतः दो तरह की उपविधियाँ सम्मिलित होती है –रेटिंग मापनी तथा साक्षात्कार |इन दोनों विधियों का वर्णन निम्नांकित है |--

(a) रेटिंग मापनी (rating scales)-रेटिंग मापनी एक ऐसा मापनी है जिसके सहारे व्यक्तित्व के शीलगुणों के बारे में लिये गये निर्णय को कुछ श्रेणियों में रिकार्ड किया जाता है |इस मापनी में कुछ संख्यात्मक श्रेणियाँ (जैसे - +3,+2,+1,0,-1,-2,-3) बनी होती है या फिर कुछ आलेखीय श्रेणियाँ बनी होती है |इन श्रेणियों का खास - खास अर्थ होता है और प्रेक्षक या रेटर व्यक्तित्व मापे जाने वाले व्यक्तियों के शीलगुणों के बारे में निर्णय कर अपनी प्रतिक्रिया इन श्रेणियों के माध्यम से व्यक्त करता है |बाद में ऐसे किये गए निर्णयों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है तथा फिर व्यक्तित्व के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है | व्यक्तित्व मापने में रेटिंग मापनी की सफलता निम्नांकित बातो पर निर्भर करती है |

(i) रेटिंग मापनी एक विश्वस्त मापनी हो ,जिसे रेटर भली-भाँती समझता हो तथा जिसमे सम्मिलित किया गया प्रत्येक श्रेणी अच्छी तरह से परिभाषित हो |

(ii) रेटर उन व्यक्तियों से भली-भांति परिचित हो जिसके व्यवहारों या शीलगुणों का रेटिंग किया जाने वाला है|

(iii) रेटिंग अपने आप को खोखले प्रभाव से दूर रखे | खोखले प्रभाव से तात्पर्य एक प्रकार ऐसा पक्षपात या पूर्वाग्रह से होता है जो रेटर की एक ख़ास दिशा में (घनात्मक या ऋणात्मक) रेटिंग करने के लिए बाध्य कर देता है |इस ढंग के प्रभाव से रेटिंग की यथार्थता ख़त्म हो जाती है |

गिलफोर्ड (1959) तथा फ्रीमैन (1962) आदि मनोवैज्ञानिकों ने कई तरह के रेटिंग मापनी का निर्माण व्यक्तित्व मापने के लिए किया है | मापनियों का प्रयोग आज भी मनोवैज्ञानिको द्वारा व्यक्तित्व मापन में सफलता पूर्वक किया जाता है |

(b) साक्षात्कार (interview)-व्यक्तित्व मापन में साक्षात्कार का प्रयोग सर्वाधिक होता है |साक्षात्कार में भेंटकर्त्ता (interviewer) उस व्यक्ति के आमने –सामने की परिस्थिति में कुछ प्रश्नों को पुछकर उनके द्वारा की गयी प्रतिक्रियाओं का प्रेक्षण करता है और इसके आधार पर व्यक्तित्व के बारे में आकलन करता है |साक्षात्कार (unstructured interview) तथा संगठित साक्षात्कार (structured interview) | संगठित साक्षात्कार में भेटकर्ता पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक निश्चित सूची तैयार करता

है जिसे वह प्रत्येक व्यक्ति से जिनके व्यक्तित्व का मापन करता है ,एक निश्चित क्रम में पूछता है | इस तरह से संगठित साक्षात्कार में एक मानक पैटर्न को अपनाते हुए भेंटकर्ता साक्षात्कार करता है | व्यक्तियों द्वारा दिए गए उत्तरों के विश्लेषण पर व्यक्तित्व की माप की जाती है |असंगठित साक्षात्कार में भेंटकर्ता प्रश्नों की एक निश्चित सूची अपने पास पहले से नहीं रखता है और व्यक्तित्व मापने के लिए अपनी इच्छानुसार प्रश्न करते जाता है |संगठित साक्षात्कार का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है की चूँकि इसमें प्रश्नों की एक निश्चित सूची एवं क्रम होता है जिसे सभी व्यक्तियों से पूछा जाता है ,अतः इसके द्वारा कई व्यक्तियों का व्यक्तित्व मापन की तुलना संभव है |इसका प्रमुख दोष यह बतलाया गया है की इसमें भेंटकर्ता को व्यक्तित्व मापने से संबंधित प्रश्नों को गहन रूप से पूछने की स्वतंत्रता नहीं होती है क्योंकि वह पहले से ही निश्चित क्रम के अनुसार प्रश्न पूछने के लिए बाध्य रहता है | असंगठित साक्षात्कार का प्रमुख गुण यह है की इसके द्वारा व्यक्तित्व का मापन गहन रूप से हो पाता है क्योंकि भेंटकर्ता प्रश्नों को अपनी इच्छानुसार तोड़-मरोड़कर पूछ पाता है | इसका

मुख्य दोष यह बतलाया गया है की इस तरह का साक्षात्कार एक व्यक्ति से दुसरे व्यक्ति तक इतना परिवर्तनशील होता है की इन व्यक्तियों के बीच तुलना संभव नहीं है | इतना ही नहीं,इस तरह के साक्षात्कार में भेंटकर्ता को पूर्वाग्रह या पक्षापात दिखलाने का भी मौका काफी मिलता है जिससे उसके द्वारा किये गए व्यक्तित्व मापन की निर्भरता कम हो जाती है |